क्लर्क का नग़्म-ए-मुहब्बत[1]

सब रात मिरी सपनों में गुज़र जाती है और मैं सोता हूँ
फिर सुब्ह की देवी आती है
अपने बिस्तर से उठता हूँ, मुँह धोता हूँ
लाया था कल जो डबलरोटी
उसमें से आधी खाई थी
बाक़ी जो बची वो मेरा आज का नाश्ता है।

दुनिया के रंग अनोखे हैं
जो मेरे सामने रहता है उसके घर में घरवाली है
और दाएँ पहलू में एक मंज़िल का है मकाँ, वो ख़ाली है
और बाईं जानिब[2] इक ऐयाश है जिसके यहाँ इक दाश्ता[3] है
और उन सबमें इक मैं भी हूँ, लेकिन बस तू ही नहीं
हैं और तो सब आराम मुझे, इक गेसुओं की ख़ुशबू ही नहीं।

फ़ारिग़[4] होता हूँ नाश्ते से और अपने घर से निकलता हूँ
दफ़्तर की राह पर चलता हूँ
रस्ते में शहर की रौनक़ है, इक ताँगा है, दो कारें हैं
बच्चे मकतब[5] को जाते हैं, और ताँगों की क्या बात कहूँ?
कारें तो छिछलती बिजली हैं, ताँगों के तीरों को कैसे सहूँ।
ये माना इनमें शरीफ़ों के घर की धन-दौलत है, माया है
कुछ शोख़ भी है, मासूम भी हैं
लेकिन रस्ते पर पैदल मुझसे बदक़िस्मत, मग्मूम[6] भी हैं
ताँगों पर बर्क़े-तबस्सुम[7] है

---

1. प्रेमगीत, 2. तरफ, 3. रखैल, 4. मुक्त, 5. पाठशाला, 6. दुखी, 7. मुस्कान की बिजली।

Scanned with CamScanner

बातों का मीठा तरन्नुम है
उकसाता है ध्यान ये रह-रहकर कुदरत[8] के दिल में तरह्हुम[9]
है?
हर चीज़ तो है मौजूद यहाँ, इक तू ही नहीं, इक तू ही नहीं
और मेरी आँखों में रोने की हिम्मत ही नहीं, आँसू ही नहीं।

जूँ-तूँ[3] रस्ता कट जाता है और बन्दीख़ाना आता है
चल काम में अपने दिल को लगा, यूँ कोई मुझे सुझाता है
मैं धीरे-धीरे दफ़्तर में अपने दिल को ले जाता हूँ
नादान है दिल, मूरख बच्चा—इक और तरह दे जाता है[4]
फिर काम का दरिया बहता है, और होश मुझे कब रहता है!

जब आधा दिन ढल जाता है तो घर से अफ़सर आता है,
और अपने कमरे में मुझको चपरासी से बुलवाता है।
यूँ कहता है, वूँ कहता है, लेकिन बेकार ही रहता है।
मैं उसकी ऐसी बातों से थक जाता हूँ, थक जाता हूँ
पल भर के लिए अपने कमरे को फ़ाइल लेने जाता हूँ
और दिल में आग सुलगती हैं : मैं भी जो कोई अफ़सर होता,
इस शह्र की धूल और गलियों से कुछ दूर मिरा फिर घर
होता,
और तू होती!
लेकिन मैं तो इक मुंशी हूँ, तू ऊँचे घर की रानी है
ये मेरी प्रेम-कहानी है और धरती से भी पुरानी है।

---

1. प्रकृति, 2. रहम, 3. ज्यों-त्यों, 4. तरह देना - कतरा जाना, टाल जाना।

Scanned with CamScanner